उपसंहार

उपसंहार

'श्रवणकुमार गोस्वामीकृत 'हस्तक्षेप' उपन्यास में चित्रित आदिवासी जीवन' के अध्ययन के उपरांत समन्वित निष्कर्ष रूप में जो तथ्य सामने आए वे इस प्रकार हैं -

नवम् दशक के महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर के रूप में श्रवणकुमार गोस्वामीजी का नाम लिया जाता है। वे प्रतिभासंपन्न एवं बहुआयामी व्यक्तित्व के साहित्यकार हैं। उन्होने शोध निबंध, एकांकी, नाटक, आलोचना, कहानी, व्यंग्य, प्रहसन, शब्दचित्र, आलोचना, लेख एवं संपादन आदि अनेक क्षेत्रों में अपनी सृजनशीलता का परिचय दिया है। लेकिन उपन्यासों के क्षेत्र में उनका कार्य अद्‌भूत एवं अपूर्व है। समाज में फैली स्वार्थांधता, अराजकता, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों की समस्याओं को समाज के सामने यथार्थ रूप में प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है। वे सहृदयी और संवेदनशील लेखक हैं। साथ ही साथ लड़ाकू और विद्रोही प्रवृत्ति भी उनके व्यक्तित्व में झलक दिखाई देती है। उनकी रचना सहज, सरल, सीधी, प्रवाहमयी भाषा में होने के कारण पाठक को पढ़ने के लिए बाध्य करती है। उन्हें समाज में बार-बार प्रताड़ित होना पड़ा, लेकिन उन्होने उससे कभी हार नहीं मानी। कठिनाईयों के वक्त वे चट्टान की भाँति अड़िग खड़े रहते हैं। उन्होने कभी पुरस्कार या ऊँचे पद की कभी अभिलाषा नहीं की। गोस्वामीजी अनुशासनप्रिय अध्ययन, अध्यापन के प्रति सदैव समर्पित एवं उच्चकोटि के प्राध्यापक भी रहे हैं।

भारतीय समाज में स्वतंत्रता के बाद जटिलताओं एवं कठिनतम् परिस्थितियों को व्यंग्यात्मक धरातल पर अभिव्यक्ति देने का प्रयास श्रवणकुमार गोस्वामी जी ने 'जंगलतंत्रम्' उपन्यास से शुरू किया था। वह उनकी परवर्ति कृतियों में और अधिक प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है। 'हस्तक्षेप' उनका नवीनतम् उपन्यास है। आदिवासियों के जीवन और संस्कृति को लेकर बहुत कुछ लिखा गया है, लेकिन वर्तमान में बदलती परिस्थितियों एवं उनके स्वच्छंदी भरे जीवन में जो नई विसंगतियाँ, विद्रूपताएँ और विकृतियाँ आयी हैं उनको प्रायः हस्तक्षेप में पहली बार उरेहा गया है। जिसमें आदिवासी जीवन को नए दृष्टिकोण से चित्रित करने का सफल प्रयास किया है।

प्रायः 'आदिवासी' यह शब्द सुनते ही हमारे सामने एक चित्र उभर जाता है कि जंगली, असहाय, अभावग्रस्तता से पीड़ित, दुर्बल, अज्ञानी, निर्धन, हीन-दीन, शोषित एवं दमित, उपेक्षित एवं अत्यंत कठिनतम् परिस्थितियों में जंगल, पहाड़ों, दरियों, पर्वत की चोटियों में रहनेवाला अर्धनग्न, भूखा-प्यासा, अंधविश्वासी, कुप्रथाओं की बर्बरता से ग्रसित, वनों पर ही अपना जीवन निर्वाह करनेवाला तथा आधुनिक सभ्यता की चकाचौंध से दूर सुदूर वनों और दुर्गम पहाड़ियों में आवास करनेवाला समुदाय या जनजाति को हम 'आदिवासी' कहते हैं। आदिवासी लोग हर प्रकार की प्रतिकुलताओं से संघर्ष करते हुए प्राकृतिक परिवेश से तादात्म्य स्थापित करके जीवन जीते हैं। आदिवासी लोग प्रकृति प्रेमी होने के कारण वह बिना वजह जंगलों को कतई नुकसान नहीं पहुँचाते। उनमें संचय करने की बिल्कुल प्रवृत्ति नहीं होती। जंगलों को सुरक्षित रखने में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। जंगल ही आदिवासी लोगों का दुनिया होती है।

स्वातंत्र्य प्राप्ति के बाद संविधान में आदिवासियों को संरक्षण मिला और सरकार की ओर से उन्हें विकास की मुख्य प्रवाह में लाने के लिए 'सन् 1993 को आंतरर्राष्ट्रीय आदिवासी वर्ष' मनाया गया। लेकिन आदिवासियों के विकास के नाम पर राजनेताओं ने सिर्फ अपनी तिजोरियाँ भरने का काम किया है। आदिवासी जीवन का उन्नयन एवं उनकी संस्कृति की हिफाजत करना आर्थिक लाभ कमानेवालों के लिए अनंत संभावनाओं का स्रोत बन गया है। 'धर्म' और 'जाति' के नाम पर पूँजीपति लोग कुंडली मारे बैठे हैं, उसी तरह 'आदिवासी' के नाम पर राजनेता लोग ठान मांडे बैठे हैं। राजनेताओं के लिए रुपए कमाने का एक बड़ा सशक्त माध्यम बन गया है। लेकिन विड़ंबना यह है कि इन आदिवासियों का शोध केवल बाहरी लोगों द्वारा नहीं हुआ, बल्कि आदिवासियों के नेता कहे जानेवाले लोगों द्वारा भी हुआ है। स्वतंत्रता के बाद आदिवासियों की समस्याओं को लेकर लिखे गए उपन्यासों की कड़ी में यह महत्त्वपूर्ण उपन्यास है। देश में विकास के लिए जो योजनाएँ बनीं, उनमें आदिवासियों पर विशेष बल दिया गया। पर विड़ंबना यह है कि विकास के नाम पर राजनेता लोगों ने अपने निजी स्वार्थ हेतु आर्थिक लूट मचाकर अपनी तिजोरियाँ भरने का कार्य किया है। श्रवणकुमार गोवामी जी का ध्यान इसकी ओर आकर्षित हो गया है। उन्होने आदिवासी जीवन के परिवेश का सूक्ष्मता से अध्ययन किया है। झारखंड, बिहार, राँची का परिवेश उनकी हृदय में रचा-बसा है। इसलिए उस परिवेश का आँखों देखा हाल उन्होने 'हस्तक्षेप'

में पूरी प्रखरता के साथ चित्रित करने में सफल हुए हैं। स्वातंत्र्योत्तर उपन्यास की एक धारा ऐसे उपन्यासों की रही है जिनमें पहाड़ी आँचलिक उपन्यासों की संस्कृति, रीति-रिवाज, रहन-सहन, लोकजीवन, परंपराएँ आदि का समग्रता के यथार्थ जीवन प्रस्तुत किया है।

आदिवासी जीवन और विवेच्य उपन्यास का आदिवासी जीवन में प्रायः समानता दिखाई देती है। आदिवासी जीवन में प्रतिकुल परिस्थितियों में संघर्ष करते हुए आदिवासी लोग स्वच्छंदी जीवन जीने के आदि हो गए हैं। प्रकृति से सहज और सरलता से जो कुछ मिलता है वह लेकर स्वच्छंदी और आनंदमयी जीवन जीते हैं। प्राकृतिक परिवेश को अपना आश्रयस्थलं, कर्मस्थलं एवं निवासस्थान बनाकर जीवनयापन करता है।

आदिवासी लोग प्रकृति के आदिम होने के कारण प्रकृति पुत्र होने की वजह प्रकृति को किसी भी प्रकार की क्षति नहीं पहुँचाते। बल्कि प्रकृति से गहरा रिश्ता बनाकर अपना उदरनिर्वाह करते हैं। आदिवासियों का जीवन सदैव अभावग्रस्तता में बीतता है। आदिवासी लोग रहन-सहन, नृत्य, संगीत, आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक स्थिति, संस्कृति, भाषा, धार्मिक पर्व एवं त्यौहार, परंपरा एवं रीतिरिवाज सबकुछ प्रकृति से तादात्म्य स्थापित करने अपना जीवन व्यतीत करता है। वे ज्यादातर वृक्षों को मित्र मानकर उनपर अपनी जीविका के माध्यमों को ढूँढ़कर उससे अपना काम चलाते हैं। वह किसी भी प्रकार की हानि नहीं करते, उनमें संचय करने की प्रवृत्ति भी नहीं होती बल्कि पर्यावरण को सुरक्षित रखने में आदिवासियों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। साथ ही साथ 'हस्तक्षेप' उपन्यास में श्रवणकुमार गोस्वामी जी ने आदिवासी जीवन को एक नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है। आदिवासियों के जीवन और संस्कृति को लेकर इधर बहुत कुछ लिखा गया है। लेकिन वर्तमान में बदलती परिस्थितियों में जो नए-नए बदलाव एवं समस्या उनके जीवन में घटित हुई है उनको संभवतः श्रवणकुमार गोस्वामी जी ने समाज के सामने यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है। 'कल्याण', 'संस्कृति', 'विकास' एवं 'आदिवासी सांस्कृतिक विकास परिषद' के नाम पर आदिवासी लोगों का शोषण किया जा रहा है। तथाकथित राजनेता तथा आदिवासियों के नेता, पुलिस, पत्रकार एवं मीडिया के लोग आदिवासी को 'माल' समझकर उन्हें जहाँ-तहाँ बेचन का प्रयास कर रहे हैं। सरकार से अनुदान हड़पकर उनका शोषण राजनेताओं ने गैर-आदिवासी, पुलिस, मीडिया के लोग एवं आदिवासियों के नेता कहे जानेवाले विधायक जी जैसे

लोगों ने किया है। यथार्थ रूप में आदिवासी लोगों का विकास न कर राजनेता लोगों ने सिर्फ अपनी तिजोरियाँ भरने का कार्य किया है। आदिवासी जीवन और विवेच्य उपन्यास का आदिवासी जीवन के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि 'आदिवासी' शब्द 'जाति' या 'धर्म' की तरह विशेषण बनकर उनके नाम पर तथाकथित स्वार्थांध लोगों ने, विधायकजी, पुलिस, पत्रकार एवं मीडिया के लोगों ने अपना व्यापार बनाकर पैसा कमाने का धंधा बनाया है। आदिवासी लोगों का वास्तविक रूप में विकास न कर उनका जीवन नरकमय, कष्टप्रद एवं यातनामय बनाने में जिम्मेदार प्रस्थापित राजकीय व्यवस्था राजनेता, गैर-आदिवासी, पुलिस, सावकार, महाजन, जमींनदार एवं आदिवासियों के नेता कहे जानेवाले विधायकजी जैसे लोग भी हैं। इस तरह के गोस्वामीजी ने 'हस्तक्षेप' उपन्यास के द्वारा आदिवासी जीवन को पाठकों के सामने यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है।

तृतीय अध्याय में तत्त्वों के आधार पर 'हस्तक्षेप' उपन्यास की समीक्षा की गई है। तत्त्वों के आधार पर 'हस्तक्षेप' उपन्यास सफलतम कृति बन गई है। श्रवणकुमार गोस्वामीजी ने 'हस्तक्षेप' उपन्यास की कथावस्तु रोचक एवं पठनीय बनाते समय प्रासंगिक कथाएँ भी महत्त्वपूर्ण बन पड़ी हैं। 'हस्तक्षेप' यह शब्द पढ़ते ही पाठक के मन में जिज्ञासा पैदा होती है। कहीं-कहीं कथावस्तु बोझिल बन गई है। लेकिन इससे मुख्य कथावस्तु में कोई क्षति नहीं पहुँचती। गोस्वामी जी ने कथावस्तु मौलिक भाषा में प्रस्तुत की है, इसलिए प्रभावशाली बन गई है। पात्र एवं चरित्र-चित्रण में लेखक ने प्रमुख पात्रों एवं गौण पात्रों के द्वारा अपने मौलिक विचार आदिवासियों के बारे में पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। उनका हर एक पात्र एवं उसका स्थान उपन्यास में अत्यंत मौलिक बन गया है। पात्र एवं चरित्र-चित्रण में भी लेखक तत्त्वों के आधार पर खरे उतरे हैं। कथोपकथन के माध्यम से लेखक ने संप्रेषणीय एवं रोचक बना दिया है। लेखक ने यहाँ छोटे-छोटे संवाद, गंभीर संवाद, मार्मिक संवाद, व्याख्यात्मक संवाद, नाटकीय संवाद, तर्कपूर्ण संवाद, हास्य-व्यंग्यपूर्ण संवाद, उपदेशात्मक संवाद एवं बड़े-बड़े संवादों का भी वर्णन दिखाई देता है। लेखक ने कथोपकथन में कानूनी कारवाई के बीच वकील की बहस के संवाद से पाठक ऊब जाता है। फिर भी कथोपकथन रोचक एवं मौलिक बन पड़ा है। देश, काल तथा वातावरण की दृष्टि से लेखक ने प्राकृतिक वर्णन, राजनीतिक वर्णन, सांस्कृतिक वर्णन एवं सामाजिक वर्णन का भी चित्रण किया है। देश काल तथा वातावरण में लेखक ने ज्यादातर राजकीय लोगों का आदिवासियों के जीवन पर

किस तरह हस्तक्षेप करके उनका जीवन तहस-नहस कर दिया है इसका वर्णन किया है। भाषा शैली के अंतर्गत आदिवासी, संस्कृत, तत्सम्, तद्भव, अंग्रेजी, लोकोक्तियाँ, मुहावरें एवं आदिवासी गीत, फिल्मी गीत, देशभक्ति गीत और आरती का भी प्रयोग किया है। गोस्वामी जी ने इन शब्दों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में किया है। गोस्वामी जी ने यहाँ एक-एक शब्दों का भी प्रयोग किया है। उपन्यास की भाषा पठनीय एवं रोचक बन गई है। शैली का भी प्रयोग 'हस्तक्षेप' में दिखाई देता है। आत्मकथात्मक, नाटकीय, वर्णनात्मक, मनोविश्लेषणात्मक, पूर्वदीप्तिशैली आदि अनेक शैलियों का प्रयोग किया है। श्रवणकुमार गोस्वामी जी ने 'हस्तक्षेप' का प्रतिपाद्य शीर्षक से स्पष्ट होता है। आदिवासी लोगों का जीवन राजनेता, पुलिस, नेताजी, विधायकजी, गैर आदिवासी आदि लोगों ने बहुत पीड़ादायक बना दिया है। आदिवासियों में आत्मसम्मान जाग्रत करके उनको अन्याय के विरूद्ध संघर्ष करने की प्रेरणा देना इसका मूल उद्देश्य है। आदिवासी लोगों के प्रति आत्मीयता दिखाते हुए उनका शोषण रोकने के लिए उनमें चेतना लाने का प्रयास प्रमुख स्त्री पात्र महुआ के माध्यम से लेखक ने किया है। आदिवासी जीवन के विकास के नाम पर चल रहा शोषण के विरूद्ध 'हस्तक्षेप' करना हो, बलात्कार से पीड़ित महिलाओं का अंतर्द्वंद्व अधिक यथार्थ एवं सहज प्रतीत होता है। कथ्य के संप्रेषण में उपन्यासकार की सफलता उसकी कृति को और भी अधिक सार्थक बना देता है। यही इस उपन्यास का मूल प्रतिपाद्य दिखाई देता है। अंत में शीर्षक की सार्थकता उपन्यास का महत्त्वपूर्ण अंग माना जाता है। शीर्षक से पाठक के मन में पढ़ने की जिज्ञासा वृद्धि, उत्सुकता, प्रभावात्मकता, स्वाभाविकता जाग्रत होने में सफल बन गया है। 'हस्तक्षेप' यह शब्द पढ़ते ही उपन्यास पढ़ने की मन में जिज्ञासा उत्पन्न होती है, कौतुहल भी होता है। 'हस्तक्षैप' याने दूसरों के जीवन में दखलदांजी करना, हेर-फेर करना, रूकावटें पैदा करना, किसी के चलते काम में बाधाएँ उत्पन्न करना, फेर-फार करना आदि बताया जाता है। आदिवासियों के दैनंदिन जीवन में नेताओं ने 'हस्तक्षेप' करके हलचल मयाची है। महुआ के कर्तव्यनिष्ठा में हस्तक्षेप किया जाता है। सरकार द्वारा बनाई विकास की योजनाओं में हस्तक्षेप, सांस्कृतिक वातावरण में आधुनिकता का हस्तक्षेप, करमा भगत के आदिवासियों की सच्ची सेवा में भी राजनेताओं का हस्तक्षेप, कानून की न्याय व्यवस्था में भी हस्तक्षेप, विश्वविद्यालयीन मतलब

शिक्षा व्यवस्था में नेताओं का हस्तक्षेप आदि अनेक बातों से शीर्षक की सार्थकता यहाँ स्पष्ट दिखाई देती है। तत्त्वों के आधार पर 'हस्तक्षेप' सफलतम् कृति बन गई है।

चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत 'हस्तक्षेप' उपन्यास में चित्रित आदिवासी जीवन की समस्याओं का अध्ययन किया गया है। आदिवासियों का जीवन अनेक समस्याओं से घिरा हुआ है। आदिवासी जीवन अभावग्रस्तता, निर्धनता, दैहिक शोषण, लालच दिखाकर आदिवासियों को फँसाना, पिछड़ेपन की समस्या, शिक्षा क्षेत्र में भ्रष्टाचार की समस्या, बलात्कार से पीड़ित आदिवासी युवतियाँ, बाहरी लोगों द्वारा आदिवासियों का शोषण, आदिवासी नेता लोगों द्वारा शोषण, पुलिस, सावकार, महाजन, मीडिया, सामाजिक कार्यकर्ता एवं पत्रकारों द्वारा भी आदिवासी लोगों का शोषण किया जाता है। राजनेता, सामाजिक कार्यकर्ता, बुद्धिजीवी लोग अपने स्वार्थ के लिए आदिवासियों का आर्थिक, मानसिक, शारीरिक शोषण करते हैं। आदिवासी लड़कियों को संस्कृति और सेवा के नाम पर उपभोग की वस्तु बनाया है। आज भी यातायात की असुविधा का सामना आदिवासियों को करना पड़ता है। आदिवासियों के विकास के नाम पर बुद्धिजीवी, राजनेता, गैर-आदिवासी, सामाजिक कार्यकर्ताओं ने विकास न कर सिर्फ अपने को मालामाल कर दिया है। स्वतंत्र भारत की यह एक बड़ी त्रासदी बन गई है। आदिवासी जीवन का यथार्थ चित्रण गोास्वामी जी ने 'हस्तक्षेप' उपन्यास में पहली बार किया है। इसलिए 'हस्तक्षेप' सफलतम् कृति बन गई है। आदिवासी जीवन के विभिन्न स्तरों में व्याप्त भ्रष्टाचार, शोषण, कुरीति, अंधविश्वास, दिशाहीनता एवं स्वार्थांधता का चित्रण किया गया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध की उपलब्धियाँ -

1. श्रवणकुमार गोस्वामी जी ने आदिवासियों को अपने अधिकार के प्रति संघर्ष करने के लिए प्रेरित करना है।
2. आदिवासियों के शोषण को रोकना है तो उन्हें युग के अनुरूप अपने को बदलना अनिवार्य है। इसके सिवाय उनका विकास कभी नहीं हो पाएगा और उनका शोषण भी कभी खत्म नहीं होगा।
3. बुद्धिजीवी लोगों ने, गैर आदिवासियों ने, पुलिस, पत्रकार एवं मीडियावालों ने रुपए कमाने के लिए आदिवासियों को मोहरा बनाया है।
4. महुआ के माध्यम से लेखक ने यहाँ आदिवासी युवतियों में संघर्ष करने को प्रेरित किया है। आदिवासी युवतियों का दैहिक, शारीरिक, मानसिक और आर्थिक रूप से शोषण 'संस्कृति' के नाम पर किया जाता है। उसे रोकने के लिए उनमें चेतना लाने का कार्य 'हस्तक्षेप' के माध्यम से लेखक ने किया है।
5. रैली, आर्थिक नाकेबंदी, जुलूस के नाम पर भूखे प्यासे आदिवासियों का शोषण राजनेता लोगों ने अपना स्वार्थ साधने के लिए किया है।
6. मीडिया एवं संवाददाताओं का भी विरोध लेखक ने किया है। मीडिया एवं संवाददाता ऐसे-ऐसे चित्र उतारने की ताक में होते हैं कि जिससे उनको आर्थिक लाभ ज्यादा हो सके।
7. आदिवासी को सजग करके उनमें चेतना लाने का महत्त्वपूर्ण कार्य लेखक ने यहाँ किया है।

अध्ययन की नई दिशाएँ -

श्रवणकुमार गोस्वामी के साहित्य पर निम्नांकित विषयों को लेकर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान किया जा सकता है -

1. श्रवणकुमार गोस्वामीकृत : हस्तक्षेप उपन्यास का अनुशीलन।
2. श्रवणकुमार गोस्वामी के 'हस्तक्षेप' उपन्यास में चित्रित नारी अस्मिता की पहचान ।

उपर्युक्त विषय मुझे अध्ययन के पश्चात् प्राप्त हुए हैं, जिन पर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान किया जा सकता है।